अंतर्राष्ट्रीय साहित्य, संस्कृति, और कला महोत्सव के अवसर माननीय राज्यपाल महोदय का अभिभाषण

(दिनांक 25 अक्टूबर, 2024)

जय हिन्द!

यह मेरे लिए अत्यंत गर्व और प्रसन्नता की बात है कि मैं आज इस अंतर्राष्ट्रीय साहित्य, संस्कृति, और कला महोत्सव के इस विशेष अवसर पर आप सभी विद्वत जनों के समक्ष उपस्थित हूँ। इस अद्वितीय और प्रेरणादायक आयोजन के शुभारंभ के अवसर मैं देश–विदेश से आए हुए सभी लेखक, कवि, कलाकार, और विद्वानों का हृदय से स्वागत करता हूँ, और आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा स्थापित 'स्पर्श हिमालय फाउंडेशन' के तत्वाधान में देश के पहले हिमालयी लेखक गाँव की स्थापना करने का यह अभिनव प्रयास न केवल हमारी संस्कृति और साहित्य को संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण कदम है, बल्कि उत्तराखण्ड के सृजनशील युवाओं और लेखकों को मंच प्रदान करने का सुनहरा अवसर भी है।

इस आयोजन और इस पहल के माध्यम से साहित्य, कला, और संस्कृति के क्षेत्र में जो नवाचार देखने को मिलेगा, वह हमारे उत्तराखण्ड की धरोहर को एक नई दिशा देगा। यह मंच उन लेखकों के लिए एक सुनहरा अवसर है, जो अपने शब्दों के माध्यम से समाज को नई राह दिखाने का सामर्थ्य रखते हैं।

साथियों,

भगवान शिव का वास, पर्वत राज हिमालय और उत्तराखण्ड सांस्कृतिक धरोहर, आदर्शों, और आद्य ज्ञान परम्परा का भी प्रतीक है। प्राचीन काल से ही यहाँ से ज्ञान और साहित्य की पावन धारा, माँ गंगा की तरह ही निश्चल और अविरल बह रही है। उत्तराखण्ड की धरती, जिसे ऋषि–मुनियों और संतों की भूमि कहा जाता है, ने सदियों से साहित्य, कला और संस्कृति को अपने भीतर समाहित किया है।

हमारे वेद, पुराण, और उपनिषदों में प्राचीन भारतीय ज्ञान एवं 5,000 साल पुरानी सभ्यता की विरासत निहित है, जिनमें पूरा ज्ञान विज्ञान समाया हुआ है। हमारे वेदों में तो पूरा ब्रह्मांड ही समाया हुआ है। आप सभी विद्वत जन भारत के इस नॉलेज सिस्टम को समाज तक पहुंचाने में अपना अहम योगदान दे सकते हैं।

यह पुण्यभूमि, महर्षि वेद व्यास की शब्द साधना की साक्षी बनी है, गुरु द्रोणाचार्य के गुरुकुल की धरती रही है और साथ ही आदि गुरु शंकराचार्य की तपभूमि भी रही है। इस धरती पर सुमित्रानंदन पंत, शैलेश मटियानी, गिरीश तिवारी 'गिर्दा' जैसे असंख्य शब्द साधकों ने अपनी कृतियों को सृजन किया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'स्पर्श हिमालय फाउंडेशन' की 'लेखक गाँव' जैसी पहलें हमें इस धरोहर को बचाने और आगे बढ़ाने में मदद करेंगी।

यहाँ के वातावरण में जो सृजनशीलता का प्रवाह है, वह आज भी अनेक लेखकों और कवियों को प्रेरित करता है। इस 'लेखक गाँव' की स्थापना हमारी उस परंपरा का जीवंत प्रमाण है, जो हमें साहित्य के माध्यम से हमारी जड़ों से जोड़ती है और हमें आत्म–चिंतन के नए आयाम प्रदान करती है।

हम सब जानते हैं कि लेखन सदा से ही विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम रहा है, लेकिन जब इसका उपयोग समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों और समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए किया जाता है, तब इसका प्रभाव और भी बढ़ जाता है। शब्दों की ताकत के माध्यम से लेखक अन्यायों को उजागर कर सकते हैं, समाज में बदलाव लाने की दिशा में लोगों को प्रेरित कर सकते हैं, और समाज में जागरूकता का प्रसार भी कर सकते हैं।

विद्वत साथियों,

चाहे वह एक कलाकार की मूर्ति हो, ब्लॉग हो, एक लेख, एक कविता, या एक संपादक को लिखी गई चिट्ठी हो, कला और लेखन के द्वारा समाज में वास्तविक परिवर्तन लाया जा सकता है। यही कारण है कि साहित्य, कला और लेखन समाज की दशा और दिशा को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक लेखक का लेखन न केवल विचारों को प्रकट करता है, बल्कि वह समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का साधन भी बनता है।

उत्तराखण्ड की इस धरती पर अनेक ऐसे महान साहित्यकार हुए हैं, जिन्होंने अपने शब्दों से सामाजिक मुद्दों पर न केवल प्रकाश डाला, बल्कि जनमानस को जागरूक करने का कार्य भी किया। डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जैसे महान साहित्यकार जिन्होंने माँ सरस्वती की माला के 108 मनको की तरह 108 रचनाएं न केवल साहित्य को समृद्ध करती हैं, बल्कि समाज में जागरूकता फैलाने और सुधार लाने का कार्य भी करती हैं। उनके लेखन में हमें पर्यावरण, शिक्षा, राष्ट्र भक्ति और समाज के अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर गहरी समझ और संवेदनशीलता देखने को मिलती है।

लेखन केवल जागरूकता फैलाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जनमत को प्रभावित करने और नीतिगत बदलाव लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब लेखक सामाजिक मुद्दों पर अपने दृष्टिकोण और शोध साझा करते हैं, तो वे समाज में परिवर्तन की एक लहर उत्पन्न कर सकते हैं। यही लेखनी की शक्ति है, जो समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट कर, उन्हें किसी मुद्दे पर कार्यवाही करने के लिए प्रेरित करती है।

साथियों,

आज के इस बदलते युग में, जब हम चौथी औद्योगिक क्रांति के दौर से गुजर रहे हैं, तकनीकी विकास ने हमारे जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव अब साहित्य और लेखन के क्षेत्र में भी दिखाई देने लगा है। हमें इस बदलते समय के साथ साहित्य और तकनीक का समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से हम क्षेत्रीय भाषाओं और साहित्यिक धरोहरों को संरक्षित करने की दिशा में भी कदम बढ़ा सकते हैं।

आज जब एक क्लिक पर हमें विश्वभर का साहित्य मिल सकता है, तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी क्षेत्रीय भाषाएं और उनके अद्वितीय साहित्यिक खजाने भी तकनीकी साधनों के माध्यम से व्यापक स्तर पर उपलब्ध हों।

एआई के माध्यम से भाषा का अनुवाद, लेखन का विश्लेषण, और विचारों की संरचना में सहायता प्राप्त हो रही है। डिजिटल प्लेटफार्मों ने साहित्य को विश्वभर में व्यापक पाठकों तक पहुँचाने का अवसर दिया है। साथ ही, युवा पीढ़ी को साहित्य के प्रति आकर्षित करने के लिए हमें डिजिटल मीडिया और इंटरनेट का रचनात्मक उपयोग करना चाहिए। लेकिन, हमें यह भी याद रखना चाहिए कि तकनीक केवल एक माध्यम है, अंततः साहित्य की आत्मा मानवीय संवेदनाएँ, भावनाएँ और विचार ही होते हैं।

साथियों,

पिछले कुछ समय में हमारे पास कई घटनाएँ घटित हुई हैं, कोविड की महामारी से कुशलतापूर्वक पार पाने के उपरांत, वैश्विक फलक पर भारत की एक अलग पहचान बनी है। पूरी दुनिया ने भारत की नेतृत्व क्षमता और हमारी 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की नीति का लोहा माना है।

हाल ही में भारत में सम्पन्न हुए जी–20 वैश्विक शिखर सम्मेलन की मेजबानी से सम्पूर्ण विश्व अचंभित है, उत्तराखण्ड ने भी जी–20 की तीन बैठकों की सफल मेजबानी से भारत–भर से प्रसंशा प्राप्त की है।

हमने आपदा प्रबंधन के विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की भी सफल मेजबानी की, लेकिन इसी दौरान हमारे उत्तरकाशी जनपद के सिलक्यारा में एक दुर्घटना ने सबको दहला दिया जब एक निर्माणाधीन टनल में हमारे 41 साथी फंस गए, लेकिन यहाँ भी हमारे केन्द्रीय नेतृत्व की सहायता से हमने पूर्ण तत्परता दिखाते हुए सभी साथियों को सकुशल बाहर निकालने में सफलता प्राप्त की। आपको लग रहा होगा कि, ये सब बातें तो सभी को पता हैं, ये सब तो इतिहास है, तो मैं फिर से ये सब बातें क्यों कर रहा हूँ?

साथियों,

मैं जानता हूँ कि ये इतिहास है, परंतु जब आप लोग अपनी कलम से इन सभी घटनाओं का, इन सभी चुनौतियों का और इन सभी सफलताओं को अंकित करेंगे तो ये घटनाएँ इतिहास के साथ–साथ हमारी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का कार्य करेगी।

साथियों,

हमारी सोच, विचार धारणा क्या है? समाज, प्रदेश, देश–विदेश में क्या अच्छे बदलाव हो रहे हैं, मेरा मानना है कि इन सब चीजों को अंकित करना जरूरी है ताकि इन महत्वपूर्ण दस्तावेजों से आने वाली पीढ़ी प्रेरणा ले सके और सीख ले सके।

आज जब हम इस महोत्सव में साहित्य, संस्कृति, और कला का उत्सव मना रहे हैं, यह आवश्यक है कि हम लेखन की इस सशक्त शक्ति को पहचानें और इसका उपयोग समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए करें।
इस महोत्सव का उद्देश्य भी यही है कि हम अपने विचारों, संस्कृति, और कला को एक साझा मंच पर लाएँ और एक बेहतर भविष्य का निर्माण करें।

इस महोत्सव का उद्देश्य न केवल कला, साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देना है, बल्कि इसके माध्यम से हम अपने आने वाली पीढ़ियों को अपनी समृद्ध धरोहर से जोड़ना चाहते हैं। आज, जब हम तेजी से बदलते युग में प्रवेश कर रहे हैं, यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपनी सांस्कृतिक और साहित्यिक जड़ों को मजबूती से थामे रहें।

आप सभी का यहाँ आना इस बात का प्रमाण है कि उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक धारा में एक नवीन ऊर्जा का संचार हो रहा है, और मैं इससे अत्यंत प्रसन्न हूँ। इस तरह के प्रयास युवाओं में रचनात्मकता का संचार करते हैं और उनके भीतर छिपी प्रतिभाओं को उजागर करने का अवसर प्रदान करते हैं।

साथियों,

आज हम नए भारत के निर्माण के लिए बड़े संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहे है। भगवान शिव के त्रिशूल के तीन शूल की तरह ये संकल्प हैं– विकसित भारत! आत्मनिर्भर भारत! और विश्वगुरु भारत! ये संकल्प आजादी के शताब्दी वर्ष 2047 तक हम सभी के सामूहिक योगदान से ही संभव हो सकेंगे।

मुझे विश्वास है कि यहां प्रस्तुत विचार, साहित्यिक रचनाएं और विचार–विमर्श उत्तराखण्ड को एक समृद्ध साहित्यिक भूमि के रूप में उभारने में सहायक सिद्ध होंगे। मैं 'स्पर्श हिमालय फाउंडेशन' और इस कार्यक्रम के आयोजकों को उनके इस सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ, साथ ही, मैं उन सभी लेखकों, कवियों, और कलाकारों का स्वागत करता हूँ, जिन्होंने इस महोत्सव को अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित किया है।

मुझे विश्वास है कि यह महोत्सव हमें एक नई दिशा देगा, और साहित्य, संस्कृति, तथा कला के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेगा।

जय हिन्द!